Synergy 2025: A Multidisciplinary Forum for Collaborative Research and Innovation
January 2025
ISBN Number: 978-93-95305-78-5

प्रकरण

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के किशोरों की आक्रामक व्यवहार पर अध्ययन

डॉ समीना कुरैशी

असिस्टेंट प्रोफेसर

जे ई एस कॉलेज, फरहदा, बिलासपुर, छत्तीसगढ

संक्षेपीकरण (Abstract) :– आक्रमकता एवं हिंसा एक ऐसा व्यवहार है जो मनुष्य तथा पशुओं दोनों में पाया जाता है। अतः आक्रमक व्यवहार एक सार्वजनिक घटना है। बालक की अच्छी अथवा बुरी रूचियाँ तथा आदतें विद्यालय में ही विकसित होती है। विद्यालय में जिन बातों अथवा वस्तुओं को अच्छा अथवा बुरा कहते हैं, बालक भी उन्हें वैसा ही कहने लगता है। इस प्रकार विद्यालय में रहते हुए बालकों (किशोरों) के अंदर अच्छी अथवा बुरी रूचियाँ तथा आदतें आगे चलकर बालकों (किशोरों) के चरित्र को प्रभावित करती है। मनुष्य भिन्न परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न प्रकार का सामाजिक व्यवहार करता है। सामाजिक जगत में व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किये जाने वाले सामाजिक व्यवहार में आक्रमकता और हिंसा का व्यवहार भी सहज रूप से देखा जा सकता है। आक्रमक व्यवहार के लक्षण दैनिक जीवन में देखे जा सकते हैं।

महत्वपूर्ण शब्द (Key Words) :– ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र,किशोर, आक्रामक व्यवहार ।

1. **परिचय (Introduction)** :– सामाजिक जगत में व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किये जाने वाले सामाजिक व्यवहार में आक्रमकता और हिंसा का व्यवहार भी सहज रूप से देखा जा सकता है। आक्रमक व्यवहार के लक्षण दैनिक जीवन में देखे जा सकते हैं। इस प्रकार आक्रमक व्यवहार के विभिन्न पक्ष एवं प्रकार होते हैं। पहले यह सोच थी कि आक्रमक स्वाभाव अथवा अवसाद का होना किसी व्यक्ति के जीवन पर निर्भर करता है। किंतु एक नये शोध से पता चला है कि इसकी जड़ घर में होने वाली परवरिश और विद्यालय शिक्षा में छिपी है। सकारात्मक और नकारात्मक ढ़ंग की परवरिश किसी बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य पर असर डालती है। इस प्रकार उसके गुण विकसित होते हैं। उग्र स्वभाव का बना देगी या फिर गलत रास्ते पर वह चला जायेगा। भावनात्मक प्रतिक्रिया या भावनात्मक अशांति और दुश्मनी के आधार पर हताशा की वजह से या वातावरण एक ;।तवनेपनदहद्ध के आक्रमक में एक ठोस कारक सिद्ध होती है। आक्रमकता को दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाये तो किसी व्यक्ति का शत्रुतापूर्ण और विनाशकारी व्यवहार ही आक्रमकता है जिसका अर्थ एक आत्ममुखर एवं वह बल जो उसके आक्रमक स्वभाव की अभिव्यक्ति है।

2. **संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review Related Literature)** :– संबंधित साहित्य के विश्लेषणात्मक अध्ययन के बिना शोधकर्ता अंधकार में भटकता रहेगा और संभवतः जो कार्य हो चुके हैं, उन्हें व्यर्थ में दुहरायेगा। अतएव समय, ऊर्जा तथा साधनों की बचत के लिये आवश्यक है कि सभी उपलब्ध साहित्य का विस्तृत व गहन अध्ययन किया जाए।

ISBN Number: 978-93-95305-78-5

- **माथुर, कुसुम अलका और सिन्हा, एस.पी. (2002)**

  ''जेन्डर व स्वअनावरण के कार्य के रूप में आक्रमकता की दिशा एवं प्रतिक्रिया प्रारूप''।

  परिणामों से ज्ञात होता है कि आक्रमकता के अति दण्डात्मक, दण्डगत एवं अदण्डात्मक दिशाओं, उच्च व निम्न स्वअनावरण के अवरोध–दमन, अहम–प्रतिरक्षक व आवश्यकता स्थिति प्रतिक्रिया प्रारूप में सकारात्मक अंतर पाया गया।

- **प्रसाद, निरंजन व कुमार, शैलेन्द्र (2009)**

  ''क्या आक्रमकता अपराधिता की ओर अग्रसित करती है? एक इन्द्रयानुभाविक सत्यापन''।

  यह पाया गया कि व्यक्ति अपराधियों ने अनुगमन किया जबकि अन्य अपराधियों ने सकारात्मक रूप से आक्रमकता का निम्नतम स्तर प्रदर्शित किया।

- **फिशमैन, फ्लेयर जी (1965)**

  ''नैराश्य की प्रतिकूल स्थितियों के अंतर्गत आक्रमकता की अभिव्यक्ति एवं अनुमोदन की आवश्यकता''।

  इस अध्ययन में अनुमोदन की आवश्यकता जिसका मापन मारलोव क्रउन के सामाजिक वांछनीय मापनी के द्वारा किया गया है व आक्रमकता के मध्य संबंध की जाँच 60 महाविद्यालयीन महिलाओं पर की गई है। आक्रमकता को प्रकाशित करने वाले दो प्रकार के नैराश्य का प्रयोग किया गया अविहित व विहित। निम्न अनुमोदन की आवश्यकता वाले प्रयोज्यों की तुलना में कुंठित के विरूद्ध उच्च अनुमोदन की आवश्यकता वाले प्रयोज्यों ने अल्प आक्रमकता की अभिव्यक्ति की।

3. उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ (Objective and Hypothesis) :–

अध्ययन का उद्देश्य (Objective of the Study) :– लघुशोध प्रबन्ध हेतु चयन को समस्या में निम्नलिखित महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति अपेक्षित है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं –

प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन निम्न उद्देष्य निर्धारित किये गये हैं जो इस प्रकार हैं –

1. ग्रामीण एवं शहरी शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के आक्रमक व्यवहार का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण शासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमक व्यवहार का अध्ययन करना।
3. शहरी शासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमक व्यवहार का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना (Hypothesis of the Study) :–

प्रस्तुत शोध में समस्या की सार्थकता के परीक्षण हेतु निम्न परिकल्पना की रचना मापनी गई है:–

H_1 ग्रामीण एवं शहरी शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_2 ग्रामीण शासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_3 शहरी शासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

ISBN Number: 978-93-95305-78-5

4. प्रणाली एवं प्रक्रिया (Methodology and Procedure) :–

विधि (Method) :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 11वीं के छात्र–छात्राओं का चयन उद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।

जनसंख्या (Population) :– इस शोध अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने दुर्ग शहर के कक्षा 11वीं के सी.जी. तथा सी.बी.एस.ई. विद्यार्थियों का चयन किया है।

न्यादर्श (Sampling) :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में उद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा कक्षा 10वीं में अध्ययनरत् 50 ग्रामीण . तथा 50 शहरी विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

विस्तार एवं सीमांकन (Scope And Delimitation) :– प्रस्तुत अध्ययन में केवल दुर्ग शहर तक ही सीमित हैं। प्रस्तुत अध्ययन में 6 शालाओं को लिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों को लिया गया है।

उपकरण (Tools) :– प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के आक्रमक व्यवहार को जानने हेतु **डॉ जी.पी. माथुर** एवं **डॉ. राजकुमारी भटनागर** की मापनी का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधि (Statistical Techniques) :– इस अध्ययन में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं 'टी' मूल्य का प्रयोग किया गया है।

5. विश्लेषण एवं चर्चा (Analysis and Discussion) :–

प्रमाणित कल्पनाएँ (Verification of Hypothesis) :–

H_1 ग्रामीण एवं शहरी शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए प्राप्त आँकड़ों (प्राप्तांकों) को ग्रामीण एवं शहरी शासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में विभाजित किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का मध्यमान प्रमाणिक विचलन एवं "टी" मूल्य ज्ञात किया गया है।

ग्रामीण एवं शहरी शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के आक्रमक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	टी मूल्य (t)
1.	ग्रामीण एवं शहरी शासकीय विद्यालयों के छात्र	50	207.66	34.38	1.18

ISBN Number: 978-93-95305-78-5

2.	ग्रामीण एवं शहरी शासकीय विद्यालयों की छात्राएँ	50	215.54	31.47	
df = 98 P > 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।					

सारणी से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी शासकीय, विद्यालयों के छात्रों" के लिए N = 50, M = 207.66 और SD = 34.38 है तथा "ग्रामीण एवं शहरी शासकीय विद्यालयों की छात्राओं" के लिए N = 50, M = 215.54 और SD = 31-47 है।

अतः df = 98 पर ज. मान = 1.18 प्राप्त हुआ जो df = 98 तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर आवश्यक ज. मान 1.98 से कम है। अतः ग्रामीण एवं शहरी शासकीय, विद्यालयों के विद्यार्थियों के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_2 ग्रामीण शासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

ग्रामीण शासकीय विद्यालयो के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	**तुलनात्मक समूह**	**प्रदत्तों की संख्या (N)**	**मध्यमान (M)**	**प्रमाणिक विचलन (SD)**	**टी मूल्य (t)**
1.	ग्रामीण शासकीय विद्यालयों के छात्र	25	203.92	37.15	1.21
2.	ग्रामीण शासकीय विद्यालयों के छात्रा	25	215.64	30.02	
df = 48 P > 0.05					

सारणी से स्पष्ट होता है कि उपर्युक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए प्राप्त आँकड़ों (प्राप्तांकों) को ग्रामीण शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में विभाजित किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं "टी" मूल्य ज्ञात किया गया है।

"ग्रामीण शासकीय विद्यालयों के छात्रों" के लिए N = 25, M = 203.92 और SD = 37.15 है तथा "ग्रामीण शासकीय विद्यालयों की छात्राओं" के लिए N = 25, M = 215.64 और SD = 30.02 है।

अतः df = 48 पर ज. मान = 1.21 प्राप्त हुआ जो df = 48 तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर आवश्यक ज. मान 2.01 से कम है। अतः ग्रामीण शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

ISBN Number: 978-93-95305-78-5

H_3 शहरी शासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी से स्पष्ट होता है कि उपर्युक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए प्राप्त आँकड़ों (प्राप्तांकों) को शहरी शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में विभाजित किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं "टी" मूल्य ज्ञात किया गया है।

शहरी शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या ;छद्ध	मध्यमान ;डद्ध	प्रमाणिक विचलन ॑;क्द्ध	टी मूल्य ;जद्ध
1.	शहरी शासकीय विद्यालयों के छात्र	25	211.4	34.36	0.42
2.	शहरी शासकीय विद्यालयों के छात्रा	25	215.44	32.76	
df = 48	**P > 0.05**	**स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।**			

सारणी से स्पष्ट होता है कि "शहरी शासकीय विद्यालयों के छात्रों" के लिए N = 25, M = 211.4 और SD = 34.36 है तथा "शहरी शासकीय विद्यालय की छात्राओं" के लिए N = 25, M = 215.44 और SD = 32.76 है।

अतः df = 48 पर ज. मान = 0.42 प्राप्त हुआ जो df = 48 तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर आवश्यक ज. मान 2.01 से कम है। अतः शहरी शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

संदर्भित ग्रन्थ (References)

- शर्मा आर. ए. (2013), *शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया"*, आर.लाल. बुक डिपो, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ, पेज नं. 2, 4.
- माथुर, डॉ. एस.एस (2009) *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2, पृष्ठ 60
- शर्मा, आर.ए. (2008) *"शिक्षा अनुसंधान"* प्रकाशक– विनय रखेजा ब्ध्व आर.लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज, मेरठ – 250001 पृष्ठ 1–28, 29–53,
- पचौरी, डॉ गिरीश (2008) *"शिक्षा के मनोविज्ञान आधार"* प्रकाशक– विनय रखेजा ब्ध्व आर.लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज, मेरठ – 250001 पृष्ठ 65–83, 116–124, 239–243

ISBN Number: 978-93-95305-78-5

- त्रिपाठी, लाल बचन, (2008) *"आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान"*, प्रकाशक– एच.पी. भार्गव बुक हाउस, 4/230, कचहरी घाट, आगरा 282004 पृष्ठ 327–360
- वर्मा, श्रीवास्तव (2007, 2008) *"आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान"*, प्रकाशक– अग्रवाल पाब्लिकेषन निर्भय नगर, गैलाना रोड आगरा – 7 पृष्ठ 490–506–, 523–531
- राय, पारसनाथ (2007) *"अनुसंधान परिचय"*, प्रकाशक–लक्ष्मी नारायण अग्रवाल अनुपम प्लाजा – 1, ब्लॉक न. 50 संजय प्लेस, आगरा 282 002